साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 04
April 2017

इश्क करो तो आँखों में अश्क रखो

शुभाना श्री

इश्क करो तो आँखों में अश्क रखो
किसे पता कब कौन बेवफा निकले
किया था प्यार 'साहिल' भी कभी
दरिया की रवानी से
मौज इ तूफानी से
यद् है हम भी दीवाने थे कभी
यार का जबसे छूता दमन
विराना हो गया दिल का चमन
सोचता हु कभी फिर उनसे मुलाकात हो
दिल की बांटें हो न हो आँखों से बरसात हो
और बुझे जज्बातों के दीये जले
सुना है 'साहिल' आँखों की नमी से
दिल के पौधें देते है नै कोपलें
जनता हु पतझड़ है ये जीवन
फिर भी इंतजार है की आये सावन
और फिर से दिल के फुल खिले

ISSN 2454-2695
Volume 03 Issue 04
April 2017

उन्हें ये बता देना हवाएं
उन्हें याद दिला देना फ़िजाए
उनकी याद में हम दिन-रत जले
वे बेरहम है फिर भी मेरे सनम है
उन्ही के लिए बस रुकी है सांसें, ये भी कहो
इश्क करो तो आँखों में अश्क रखो